रहमते इलाही की वुस्अ़त और तौबा की अहम्मिय्यत को उजागर करने वाली फ़िक्र अंगेज़ तहरीर

Bete Ki Vasiyyat (Hindi)

बेटे की वसिय्यत

पेशकश : मर्कज़ी मजलिसे शूरा
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه **दीनी** किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(المُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

बेटे की वसिय्यत

येह रिसाला **(बेटे की वसिय्यत)**

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)
मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात
MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

बेटे की वसिय्यत[1]

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 400 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की किताब **पर्दे के बारे में सुवाल जवाब** सफ़ह़ा 1 पर है : ह़ज़रते सय्यिदुना उबय बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अ़र्ज़ की, कि मैं (सारे विर्द, वज़ीफ़े, दुआ़एं छोड़ दूंगा और) अपना सारा वक़्त दुरूद ख़्वानी में सर्फ़ करूंगा। तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "येह तुम्हारी फ़िक्रों को दूर करने के लिये काफ़ी होगा और तुम्हारे गुनाह मुआ़फ़ कर दिये जाएंगे।"[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1..... मुबल्लिगे़ दा'वते इस्लामी व निगराने मर्कज़ी मजलिसे शूरा ह़ज़रत मौलाना ह़ाजी अबू ह़ामिद मुह़म्मद इमरान अ़त्तारी مَدَّظِلُّهُ الْعَالِی ने येह बयान 3 र-मज़ानुल मुबारक 1429 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 4 सितम्बर 2008 सि.ई. बरोज़ जुम्आ़रात आ़लमी म-दनी मर्कज़ फ़ैज़ाने मदीना बाबुल मदीना कराची में फ़रमाया। ज़रूरी तरमीम व इज़ाफ़े के बा'द 25 सफ़रुल मुज़फ़्फ़र 1434 सि.हि. ब मुत़ाबिक़ 29 दिसम्बर 2013 सि.ई. को तह़रीरी सूरत में पेश किया जा रहा है।

(शो'बए रसाइले दा'वते इस्लामी **मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या**)

2 ... ترمذی، کتاب صفۃ القیامۃ، ۲۳-باب، ۴/۲۰۷، حدیث ۲۴۶۵

www.dawateislami.net

नदामत के सबब मग़्फ़िरत

एक बुज़ुर्ग رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं कि मैं एक बार निस्फ़ रात गुज़र जाने के बा'द जंगल की त़रफ़ निकल खड़ा हुवा, रास्ते में मैं ने देखा कि चार आदमी एक जनाज़ा उठाए जा रहे हैं, मैं समझा कि शायद उन्हों ने इसे क़त्ल किया है और लाश ठिकाने लगाने के लिये कहीं ले जा रहे हैं। जब वोह मेरे नज़्दीक आए तो मैं ने हिम्मत कर के उन से पूछा : "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का जो ह़क़ तुम पर है उस को सामने रखते हुए मेरे सुवाल का जवाब दो ! क्या तुम ने ख़ुद इसे क़त्ल किया है या किसी और ने ? और अब तुम इसे ठिकाने लगाने के लिये कहां ले जा रहे हो ?" उन्हों ने जवाब दिया कि न तो हम ने इसे क़त्ल किया है और न ही येह मक़्तूल है बल्कि हम मज़्दूर हैं और इस की मां ने हमें मज़्दूरी देनी है, वोह इस की क़ब्र के पास हमारा इन्तिज़ार कर रही है, आओ ! तुम भी हमारे साथ आ जाओ । मैं तजस्सुस की वज्ह से उन के साथ हो लिया, हम क़ब्रिस्तान में पहुंचे तो मैं ने देखा कि ताज़ा खुदी हुई क़ब्र के पास वाक़ेई एक बूढ़ी ख़ातून खड़ी थीं। मैं उन के क़रीब गया और पूछा : "अम्मांजान ! आप अपने बेटे के जनाज़े को दिन के वक़्त यहां क्यूं नहीं लाईं ताकि और लोग भी इस के कफ़न दफ़्न में शरीक हो जाते ?" उन्हों ने कहा : "येह जनाज़ा मेरे लख़्ते जिगर का है, मेरा येह बेटा शराबी और गुनहगार था, हर वक़्त शराब के नशे और गुनाह के दलदल में फंसा रहता था। जब इस की मौत का वक़्त क़रीब आया तो इस ने मुझे बुला कर तीन चीज़ों की वसिय्यत की :

www.dawateislami.net

1. जब मैं मर जाऊं तो मेरी गरदन में रस्सी डाल कर घर के इर्द गिर्द घसीटना और लोगों को कहना कि गुनहगारों और ना फ़रमानों की येही सज़ा होती है।
2. मुझे रात के वक़्त दफ़्न करना क्यूं कि दिन के वक़्त जो भी मेरे जनाज़े को देखेगा मुझे ला'न त़ा'न करेगा।
3. जब मुझे क़ब्र में रखने लगो तो मेरे साथ अपना एक सफ़ेद बाल भी रख देना क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ सफ़ेद बालों से ह़या फ़रमाता है, हो सकता है कि वोह मुझे इस की वज्ह से अ़ज़ाब न दे।

जब येह फ़ौत हो गया तो इस की पहली वसिय्यत के मुत़ाबिक़ मैं ने इस के गले में रस्सी डाली और इसे घसीटने लगी तो हातिफ़े ग़ैबी से आवाज़ आई : "ऐ बुढ़िया ! इसे यूं मत घसीटो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इसे अपने गुनाहों पर शर्मिन्दगी (या'नी तौबा) की वज्ह से मुआ़फ़ फ़रमा दिया है।" वोह बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : "जब मैं ने उस औ़रत की येह बात सुनी तो मैं उस जनाज़े के पास गया, नमाज़े जनाज़ा पढ़ी फिर उसे क़ब्र में दफ़्न कर दिया। मैं ने उस की मां के सर का एक सफ़ेद बाल भी उस के साथ क़ब्र में रख दिया। इस काम से फ़ारिग़ हो कर जब हम उस की क़ब्र को बन्द करने लगे तो उस के जिस्म में ह़-र-कत पैदा हुई और उस ने अपना हाथ कफ़न से बाहर निकाल कर बुलन्द किया और आंखें खोल दीं। मैं येह देख कर घबरा गया लेकिन उस ने मुझे मुख़ात़ब कर के मुस्कुराते हुए कहा : "ऐ शैख़ ! हमारा रब عَزَّوَجَلَّ बड़ा ग़फ़ूरो रह़ीम है, वोह नेकी करने वालों को भी बख़्श देता है और गुनहगारों को भी मुआ़फ़ फ़रमा देता है।" येह कह कर उस ने हमेशा के लिये आंखें बन्द कर

www.dawateislami.net

लीं फिर हम सब ने मिल कर उस की क़ब्र को बन्द कर दिया और उस पर मिट्टी दुरुस्त कर के वापस आ गए।[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

गुनाहों का एह़सास पैदा कीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़िकायत में एक शराबी और इन्तिहाई पापी शख़्स पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के रह़मो करम का तज़्किरा है जिस से रह़मते ख़ुदावन्दी की वुस्अ़त का बख़ूबी अन्दाज़ा लगाया जा सकता है कि अगर गुनाहों की दलदल में फंसा हुवा कोई शख़्स सन्जी-दगी से अपना एह़तिसाब करे और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से अपनी ख़त़ाओं की मुआ़फ़ी मांगे तो वोह ग़फ़ूरो रह़ीम عَزَّوَجَلَّ ज़रूर उस पर अपने रह़मो करम की बारिश फ़रमाता है। मज़्कूरा ह़िकायत में अगर्चे उस नौ जवान की तौबा का वाज़ेह़ तज़्किरा मौजूद नहीं मगर मरते दम उस ने अपनी मां को जो वसिय्यतें कीं उन से पता चलता है कि वोह अपने गुनाहों पर सख़्त नादिम था और नदामत ही दर ह़क़ीक़त तौबा है। जैसा कि

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''اَلنَّدَمُ تَوْبَةٌ या'नी शर्मिन्दगी तौबा है।''[2]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

1..... तौबा की रिवायात व ह़िकायात, स. 73

2 ... ابن ماجة، ابواب الزهد، باب ذكر التوبة، ۴/۴۹۲، حديث: ۴۲۵۲

www.dawateislami.net

मुफ़स्सिरे शहीर, **हकीमुल उम्मत** मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : "चूंकि गुज़श्ता (गुनाहों) पर नदामत तौबा का रुक्ने आ'ला है कि इस पर बाक़ी सारे अरकान[1] मब्नी हैं, इस लिये सिर्फ़ नदामत का ज़िक्र फ़रमाया। (ज़ाहिर है) जो किसी का ह़क़ मारने पर नादिम होगा तो ह़क़ अदा भी कर देगा, जो बे नमाज़ी होने पर शर्मिन्दा होगा वोह गुज़श्ता छूटी नमाज़ें क़ज़ा भी कर लेगा اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ।"[2]

तौबा की अहम्मिय्यत

याद रखिये ! ख़ुद को राहे रास्त पर लाने के लिये अपने अन्दर गुनाहों का एह़सास पैदा करना और इन के दुन्यवी व उख़्रवी नुक़्सानात पर ग़ौर करना बहुत ज़रूरी है क्यूं कि जब किसी इन्सान के दिल में एह़सासे गुनाह पैदा होता और वोह गुनाह को गुनाह समझने लगता है तो यक़ीनन नदामत व पशेमानी से उस का सर झुक जाता, दिल तौबा की त़रफ़ माइल हो जाता और आंखों से आंसूओं के धारे बहने लगते हैं। जब कोई गुनहगार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी मांगता है तो वोह करीम रब उस का बड़े से बड़ा गुनाह भी बख़्श देता है।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ से रिवायत है कि हुज़ूर निबय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم इर्शाद

1...... तौबा के तीन अरकान हैं : (1) माज़ी पर नदामत (2) तर्के गुनाह (3) येह अ़ज़्म (पक्का इरादा) कि आइन्दा गुनाह नहीं करूंगा।

(منح الروض الازھر، تعریف التوبۃ ومراتبھا وامثلۃ علیھا، ص ۴۳۶)

2...... मिरआतुल मनाजीह़, 3/379

www.dawateislami.net

फ़रमाते हैं : "एक बन्दे ने गुनाह किया और कहा : "ऐ **अल्लाह** ! मेरे गुनाह बख़्श दे ।" **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : "मेरे बन्दे ने गुनाह किया और उस को यक़ीन है कि उस का रब है जो गुनाह मुआ़फ़ भी करता है और गुनाह पर गिरिफ़्त भी फ़रमाता है ।" फिर दोबारा वोह बन्दा गुनाह करता है और कहता है : "ऐ मेरे रब ! मेरा गुनाह मुआ़फ़ कर दे ।" **अल्लाह** तआ़ला इर्शाद फ़रमाता है : "मेरे बन्दे ने गुनाह किया और उस को यक़ीन है कि उस का रब है जो गुनाह मुआ़फ़ भी करता है और गुनाह पर गिरिफ़्त भी करता है ।" वोह बन्दा फिर गुनाह कर के **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में अ़र्ज़ करता है : "ऐ मेरे रब ! मेरा गुनाह मुआ़फ़ फ़रमा दे ।" **अल्लाह** तआ़ला फ़रमाता है : "मेरे बन्दे ने गुनाह किया है और उस को यक़ीन है कि उस का रब है जो गुनाह मुआ़फ़ भी करता है और गुनाह पर मुआ-ख़ज़ा (पकड़) भी फ़रमाता है ।" (फिर फ़रमाता है) "तू जो चाहे कर मैं ने तेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी ।"[1]

ख़बरदार ! ह़दीसे पाक के आख़िरी अल्फ़ाज़ या'नी "**तू जो चाहे कर मैं ने तेरी मग़्फ़िरत फ़रमा दी**" इस से हरगिज़ हरगिज़ कोई इस ग़लत़ फ़ह्मी में न पड़े कि तौबा के बा'द साबिक़ा गुनाहों की मुआ़फ़ी के साथ साथ आयिन्दा गुनाह करने की भी इजाज़त मिल जाती है अ़ल्लामा इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी قُدِّسَ سِرُّهُ النُّوْرَانِی फ़रमाते हैं : "इस का मत़लब येह है कि तू जब भी गुनाह के बा'द तौबा करेगा मैं तुझे मुआ़फ़ कर दूंगा ।"[2] लिहाज़ा जाने अन्जाने में अगर कोई गुनाह सरज़द हो जाए तो फ़ौरन तौबा करनी चाहिये क्यूं कि

1 ... مسلم، کتاب التوبة، باب قبول التوبة من الذنوب... الخ، ص ۱۴۷۴، حدیث: ۲۷۵۸

2 ... فتح الباری، کتاب التوحید، باب قول الله تعالی یریدون ان یبدلوا... الخ، ۱۳/ ۴۰۰، تحت الحدیث: ۷۵۰۷

www.dawateislami.net

ज़िन्दगी का कोई भरोसा नहीं अगर कोई शख़्स तौबा में ताख़ीर करता गया और उस की मौत का वक़्त आ पहुंचा तो अब तौबा करना बे सूद साबित हो सकता है। जैसा कि पारह **4 सू-रतुन्निसाअ** की आयत 17 और 18 में इर्शाद होता है :

اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿۱۷﴾ وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ اِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ (پ۴، النساء: ۱۸،۱۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह तौबा जिस का क़बूल करना **अल्लाह** ने अपने फ़ज़्ल से लाज़िम कर लिया है वोह उन्ही की है जो नादानी से बुराई कर बैठें फिर थोड़ी ही देर में तौबा कर लें, ऐसों पर **अल्लाह** अपनी रह़मत से रुजूअ़ करता है और **अल्लाह** इल्मो ह़िक्मत वाला है और वोह तौबा उन की नहीं जो गुनाहों में लगे रहते हैं यहां तक कि जब उन में किसी को मौत आए तो कहे अब मैं ने तौबा की।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْهَادِي इस आयते मुबा-रका के तह़्त फ़रमाते हैं : "क़बूले तौबा का वा'दा जो ऊपर की आयत में गुज़रा वोह ऐसे लोगों के लिये नहीं है (जो गुनाहों में लगे रहते हैं यहां तक कि जब उन में किसी को मौत आए तो कहे अब मैं ने तौबा की।) **अल्लाह** मालिक है जो चाहे करे, उन की तौबा क़बूल करे या न करे, बख़्शे या अ़ज़ाब फ़रमाए उस की मरज़ी।"

www.dawateislami.net

बार बार तौबा कीजिये !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला की रह़मतें बेह़द्दो बे ह़िसाब हैं, लिहाज़ा हमें चाहिये कि जब भी हम से गुनाह सरज़द हो जाए तो उस की बारगाह में तौबा कर लें। अगर ब तक़ाज़ाए ब-शरिय्यत फिर गुनाह कर बैठें तो फिर तौबा कर लें, फिर ख़त़ा हो जाए तो फिर तौबा करें चाहे लाख बार भटक जाएं मगर फिर आ कर उस के दामने करम से लिपट जाएं और हरगिज़ हरगिज़ मायूस न हों। ग़ौर तो कीजिये कि क़ुरआने करीम में जा बजा रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ ख़ुद अपने बन्दों को तौबा की तरग़ीब दिला रहा है। आइये इस ज़िम्न में 6 फ़रामीने ख़ुदावन्दी मुला-ह़ज़ा कीजिये :

तौबा के बारे में 6 फ़रामीने ख़ुदावन्दी

فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَ اَصْلَحَ فَاِنَّ اللّٰهَ یَتُوْبُ عَلَیْهِ ؕ

(پ۶، المآئدۃ:۳۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तो जो अपने ज़ुल्म के बा'द तौबा करे और संवर जाए तो **अल्लाह** अपनी मेह्र (रह़मत) से उस पर रुजूअ़ फ़रमाएगा।

وَ تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ جَمِیْعًا اَیُّهَ الْمُؤْمِنُوْنَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ﴿۳۱﴾

(پ۱۸، النور:۳۱)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और **अल्लाह** की त़रफ़ तौबा करो ऐ मुसल्मानो ! सब के सब इस उम्मीद पर कि तुम फ़लाह़ पाओ।

www.dawateislami.net

اَلَّذِیْنَ یَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَ مَنْ حَوْلَهٗ یُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَ یُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَ یَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَیْءٍ رَّحْمَةً وَّ عِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِیْنَ تَابُوْا وَ اتَّبَعُوْا سَبِیْلَكَ وَ قِهِمْ عَذَابَ الْجَحِیْمِ ۝ (پ۲۴، المؤمن:۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : वोह जो अ़र्श उठाते हैं और जो इस के गिर्द हैं अपने रब की ता'रीफ़ के साथ उस की पाकी बोलते और उस पर ईमान लाते और मुसल्मानों की मग़्फ़िरत मांगते हैं ऐ रब हमारे तेरे रह़मतो इ़ल्म में हर चीज़ की समाई है तो उन्हें बख़्श दे जिन्हों ने तौबा की और तेरी राह पर चले और उन्हें दोज़ख़ के अ़ज़ाब से बचा ले।

اِلَّا مَنْ تَابَ وَ اٰمَنَ وَ عَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ یُبَدِّلُ اللّٰهُ سَیِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ۝ (پ۱۹، الفرقان:۷۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मगर जो तौबा करे और ईमान लाए और अच्छा काम करे तो ऐसों की बुराइयों को **अल्लाह** भलाइयों से बदल देगा और **अल्लाह** बख़्शने वाला मेह्रबान है।

اِلَّا مَنْ تَابَ وَ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا فَاُولٰٓئِكَ یَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَ لَا یُظْلَمُوْنَ شَیْـٴًـا ۝ (پ۱۶، مریم:۶۰)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मगर जो ताइब हुए और ईमान लाए और अच्छे काम किये तो येह लोग जन्नत में जाएंगे और इन्हें कुछ नुक़्सान न दिया जाएगा।

اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ التَّوَّابِیْنَ (پ۲، البقرۃ:۲۲۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक **अल्लाह** पसन्द रखता है बहुत तौबा करने वालों को।

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि तौबा करने वाले पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की कैसी करम नवाज़ी होती है, लिहाज़ा अगर लगन सच्ची और तौबा पक्की हो तो मज़्कूरा आयाते करीमा की रोशनी में दर्जे ज़ैल 6 फ़ज़ाइल ह़ासिल होंगे ।

1. **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के करम से तौबा करने वाले की तौबा क़बूल होगी ।
2. दुन्या व आख़िरत में काम्याबी उस के क़दम चूमेगी ।
3. अ़र्श उठाने वाले फ़िरिश्ते उस की मग़्फ़िरत और अ़ज़ाबे जहन्नम से ह़िफ़ाज़त की दुआ़ करेंगे ।
4. उस की बुराइयां नेकियों में तब्दील कर दी जाएंगी ।
5. उसे जन्नत में दाख़िले का परवाना मिलेगा ।
6. तौबा करने वाला **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मह़बूब बन जाएगा ।

سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! तौबा करने वाले के लिये इस से बढ़ कर और क्या इन्आ़म हो सकता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इसे पसन्द फ़रमाए, उस से ख़ुश हो और उसे अपना मह़बूब बन्दा बना ले । इस इन्आ़म को ह़ासिल करने के लिये बुज़ुर्गाने दीन मुत्तक़ी व परहेज़ गार होने के बा वुजूद सच्ची तौबा की कैसी दुआ़एं मांगा करते थे । चुनान्चे

तौबा का इन्आ़म

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू इस्ह़ाक़ عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الرَّزَّاق फ़रमाते हैं : "मैं ने तीस साल तक **अल्लाह** तआ़ला की बारगाह में दुआ़ मांगी कि ऐ **अल्लाह** ! तू मुझे सच्ची और ख़ालिस तौबा और ख़ालिस तौबा की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा ।" तीस बरस गुज़र जाने के बा'द मैं अपने दिल में तअ़ज्जुब करते हुए बारगाहे ईज़्दी में अ़र्ज़ गुज़ार

www.dawateislami.net

हुवा : "سُبْحٰنَ اللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने तीस बरस तक तेरी बारगाह में एक ह़ाजत की इल्तिजा की लेकिन तू ने अब तक मेरी वोह ह़ाजत पूरी नहीं की।" जब मैं सो गया तो ख़्वाब में देखा कि एक शख़्स मुझ से कह रहा था : "तुम अपनी तीस साला दुआ़ (के क़बूल न होने) पर तअ़ज्जुब और ह़ैरत करते हो ? क्या तुम्हें येह नहीं मा'लूम कि तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से किस चीज़ का सुवाल कर रहे हो ? तुम इस बात का सुवाल कर रहे हो कि **अल्लाह** तआ़ला तुम्हें अपना दोस्त और मह़बूब बना ले, क्या तुम ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का येह फ़रमान नहीं सुना : اِنَّ اللّٰهَ یُحِبُّ التَّوَّابِیْنَ وَ یُحِبُّ الْمُتَطَهِّرِیْنَ ﴿۲۲۲﴾ (پ ۲، البقرۃ : ۲۲۲) (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पसन्द करता है बहुत तौबा करने वालों को और पसन्द रखता है सुथरों को।) तो क्या तुम उस की मह़ब्बत को मा'मूली समझते हो ?"(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तौबा की ज़रूरत किस को है ?

याद रखिये ! तौबा के लिये गुनाह सरज़द होना या गुनाह याद होना ज़रूरी नहीं हर शख़्स को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में तौबा व इस्तिग़्फ़ार करते रहना चाहिये ख़्वाह वोह निकोकार हो या गुनहगार नीज़ इसे अपनी ख़ता याद हो या न हो। शायद बा'ज़ लोगों के ज़ेह्न में येह वस्वसा आता हो कि मैं तो बहुत मुत्तक़ी व परहेज़ गार हूं या येह कि मैं तो काफ़ी अ़र्से पहले तौबा कर चुका हूं लिहाज़ा मुझे तौबा करने की ह़ाजत नहीं इस त़रह़ के वस्वसों का इ़लाज ह़ज़रते सय्यिदुना इस्माईल ह़क़्क़ी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی के इस फ़रमान में मौजूद

1 ... منهاج العابدين، العقبة الثانية عقبة التوبة، ص ۲۴

www.dawateislami.net

है कि "**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तमाम मुसल्मानों को तौबा व इस्तिग़्फ़ार का हुक्म फ़रमाया इस लिये कि इन्सान फ़ित़्रतन कमज़ोर है बा वुजूद कोशिश के वोह किसी न किसी ग़-लती में पड़ ही जाता है।" इमाम क़ुशैरी عَلَيۡهِ رَحۡمَةُ اللهِ الۡقَوِی फ़रमाते हैं : "तौबा की सब से ज़ियादा ज़रूरत उस शख़्स को है जो येह समझता हो कि मुझे तौबा करने की कोई ज़रूरत नहीं।"(1)

वाक़ेई इस बात का ह़क़ीक़त से गहरा तअ़ल्लुक़ है कि जो लोग झूट, ग़ीबत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी, बोहतान त़राज़ी, गाली गलोच, फ़िल्मों डिरामों और गाने बाजों वग़ैरा गुनाहों में हर वक़्त मगन रहते हैं वोह ज़बाने ह़ाल से येही कह रहे होते हैं कि हमें तौबा की क्या ज़रूरत ? जब कि इस के बर अ़क्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दे गुनाहों से बचने के बा वुजूद हर दम ख़ौफ़े ख़ुदा से कांपते, आंसू बहाते और तौबा व इस्तिग़्फ़ार की कसरत करते रहते हैं इस ज़िम्न में आक़ाए दो जहां, ह़ामिये बे कसां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का त़र्ज़े अ़मल भी हमारे सामने है कि आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم न सिर्फ़ तौबा व इस्तिग़्फ़ार की तरग़ीब दिया करते थे बल्कि गुनाहों से पाको साफ़ होने के बा वुजूद ख़ुद भी दिन में कई कई बार इस्तिग़्फ़ार किया करते थे। जैसा कि

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنۡهُمَا से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ लोगो ! **अल्लाह** तआ़ला से तौबा करो, बेशक मैं भी दिन में सो मर्तबा इस्तिग़्फ़ार करता हूं।"(2)

---

1 ... روح البیان، پ۱۸، النور، تحت الآیۃ:۳۱، ۶/۱۴۵

2 ... مسلم، کتاب الذکر والدعاء، باب استحباب الاستغفار...الخ، ص ۱۴۴۹، حدیث:۲۷۰۲

www.dawateislami.net

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के तौबा व इस्तिग़्फ़ार के मा'मूल को बयान करते हुए फ़रमाते हैं : ''हम **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को एक ही मजलिस में सो सो बार رَبِّ اغْفِرْلِی وَتُبْ عَلَیَّ اِنَّکَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِیْمُ के कलिमात पढ़ते हुए गिना करते थे।''(1)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आप ख़ुद ही फ़ैसला कीजिये कि जब प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने ख़ुद दिन में सो सो बार इस्तिग़्फ़ार करना अपना मा'मूल बनाया तो हम गुनहगारों को किस क़दर तौबा व इस्तिग़्फ़ार की ज़रूरत है लिहाज़ा अगर इस क़िस्म के शैत़ानी वस्वसे आएं कि ''मैं ने आख़िर ऐसा कौन सा गुनाह कर लिया जो मैं तौबा करूं।'' या येह कि ''मैं तो तौबा कर चुका हूं अब कोई ज़रूरत नहीं है'' या येह कि ''मैं तो नमाज़ व रोज़े का पाबन्द हूं मुझे क्या ज़रूरत पड़ी जो तौबा करूं वग़ैरा वग़ैरा'' तो हरगिज़ हरगिज़ इन वस्वसों को दिल में जगह न दीजिये। आइये तौबा की ज़रूरत व अहम्मिय्यत जानने के लिये इस से मु-तअ़ल्लिक़ चन्द अह़ादीस और बुज़ुर्गाने दीन के अक़्वाल मुला-ह़ज़ा कीजिये।

सुब्ह़ो शाम तौबा

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्क़ बिन ह़बीब عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْمُجِیْب फ़रमाते हैं : ''बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुक़ूक़ इतने हैं कि बन्दा इन्हें अदा नहीं कर सकता और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ने'मतें इस क़दर कसीर हैं

1 ... ابوداود، کتاب الوتر، باب فی الاستغفار، ۲/۱۲۱، حدیث: ۱۵۱۶

www.dawateislami.net

कि इन को शुमार नहीं किया जा सकता लेकिन सुब्हो शाम तौबा किया करो।''(1)

तौबा करने वालों के लिये ख़ुश ख़बरी

ह़ज़रते सय्यिदुना फ़ुज़ैल رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه फ़रमाते हैं : ''**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया, गुनहगारों को ख़ुश ख़बरी दीजिये कि अगर वोह तौबा करेंगे तो मैं क़बूल करूंगा और सिद्दीक़ीन को इस बात से डराइये कि अगर मैं ने अ़द्ल से काम लिया तो उन को अ़ज़ाब दूंगा।''(2)

पलक झपक्ने से पहले तौबा क़बूल

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन सलाम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه ने फ़रमाया : ''मैं तुम से जो बात भी बयान करूंगा वोह किसी भेजे हुए नबी या उतारी गई किताब से बयान करूंगा, बेशक! बन्दा जब गुनाह का मुर-तकिब होता है फिर पलक झपक्ने के बराबर भी नादिम हो तो पलक झपक्ने से भी जल्दी वोह गुनाह ज़ाइल हो जाता है।''(3)

नामए आ'माल से गुनाह मिट जाता है

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन उ़मर رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا फ़रमाते हैं : ''जो शख़्स अपने उस गुनाह को याद करे जिस की वज्ह से इसे (आख़िरत में) तक्लीफ़ दी जाएगी और फिर अपने दिल को

1 ... الزهد، باب الهرب من الخطايا والذنوب، ص۱۰۱، حديث: ۳۰۲

2 ... احياء العلوم، كتاب التوبة، بيان ان التوبة اذا استجمعت شرائطها الخ...، ۱۸/۴

3 ... احياء العلوم، كتاب التوبة، بيان ان التوبة اذا استجمعت شرائطها الخ...، ۱۸/۴

www.dawateislami.net

उस गुनाह से पाक कर ले तो इस के नामए आ'माल से भी वोह गुनाह मिट जाता है।"[1]

शैत़ान की तमन्ना !

बा'ज़ बुज़ुर्ग फ़रमाते हैं : "बन्दा गुनाह कर के उस पर मुसल्सल नादिम रहता है ह़त्ता कि जन्नत में दाख़िल हो जाता है, शैत़ान कहता है काश ! मैं इसे गुनाह में मुब्तला न करता।"[2]

नर्म दिल वाले

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने फ़रमाया : "तौबा करने वालों के पास बैठा करो क्यूं कि उन के दिल बहुत नर्म होते हैं।"[3]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! चूंकि शैत़ान को ख़ुद तौबा की तौफ़ीक़ नहीं इस लिये अब वोह नहीं चाहता कि कोई दूसरा भी तौबा कर के उस के साथियों की फ़ेहरिस्त से निकल कर राहे जन्नत का मुसाफ़िर बन जाए। चुनान्चे वोह तौबा से रोकने के लिये एड़ी चोटी का ज़ोर लगा देता है और इन्सान को इस की आख़िरी सांस तक बहकाने की कोशिश करता है कि किसी त़रह़ वोह गुनाह कर के जहन्नम का ह़क़दार बन जाए मगर रह़मते ख़ुदावन्दी के क़ुरबान जाइये कि हम जब भी उस से मग़्फ़िरत त़लब करें वोह हमें बख़्श देता है। जैसा कि

---

1 ... احیاء العلوم، کتاب التوبۃ، بیان ان التوبۃ اذا استجمعت شرائطھا الخ...، ۴/۱۸

2 ... احیاء العلوم، کتاب التوبۃ، بیان ان التوبۃ اذا استجمعت شرائطھا الخ...، ۴/۱۸

3 ... الزھد، باب ما جاء فی الحزن والبکاء، ص ۴۲، حدیث: ۱۳۲

www.dawateislami.net

आओ गुनहगारो ! मग़्फ़िरत मांग लो.....

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ बयान करते हैं कि **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "शैत़ान ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में कहा : وَعِزَّتِكَ يَا رَبِّ لَا اَبْرَحُ اُغْوِى عِبَادَكَ مَا دَامَتْ اَرْوَاحُهُمْ فِى اَجْسَادِهِمْ या'नी ऐ मेरे रब ! मुझे तेरी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जब तक बन्दों के जिस्मों में रूह़ बाक़ी है, मैं उन्हें बहकाता रहूंगा। **अल्लाह** तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : "وَعِزَّتِى وَجَلَالِى لَا اَزَالُ اَغْفِرُ لَهُمْ مَا اسْتَغْفَرُوْنِى" या'नी मुझे अपनी इ़ज़्ज़तो जलाल की क़सम ! जब तक वोह मुझ से मग़्फ़िरत मांगते रहेंगे मैं उन की मग़्फ़िरत करता रहूंगा।"[1]

शैत़ान का चेलेन्ज

याद रखिये ! मज़्कूरा ह़दीसे पाक में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बे पायां बख़्शिशो मग़्फ़िरत का तज़्किरा सुन कर जहां हमें ख़ुश होना चाहिये वहीं इब्ने आदम के साथ शैत़ान के बुग़्ज़ो अ़दावत के बारे में सुन कर फ़िक्र मन्द भी होना चाहिये कि वोह हर चन्द हमें बहकाने और किसी सूरत जहन्नम का ईंधन बनाने की फ़िक्र में लगा हुवा है और न सिर्फ़ शैत़ान ख़ुद बल्कि इस की पूरी जुर्रियत इस कोशिश में सरगर्मे अ़मल है। जैसा कि

तफ़्सीरे दुर्रे मन्सूर में है कि जब येह आयते मुबा-रका नाज़िल हुई :

وَالَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ فَاسْتَغْفَرُوْا

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और वोह कि जब कोई बे ह़याई या अपनी जानों पर ज़ुल्म करें **अल्लाह** को

1 ... مسند امام احمد، مسند ابی سعید الخدری، ۴ / ۵۸، حدیث: ۱۱۲۳۷

www.dawateislami.net

لِذُنُوْبِهِمْ ۫ وَ مَنْ یَّغْفِرُ الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۪ (پ۴، ال عمرٰن: ۱۳۵)

याद कर के अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी चाहें और गुनाह कौन बख़्शे सिवा **अल्लाह** के।

तो इब्लीस ने चीख़ चीख़ कर अपने लश्कर को पुकारा, अपने सर पर ख़ाक डाली और ख़ूब आहो ज़ारी की, ह़त्ता कि तमाम काएनात से इस के चेले जम्अ़ हो गए और बोले : "ऐ हमारे सरदार तुझे क्या हो गया ?" वोह बोला : "क़ुरआन में ऐसी आयत उतरी है कि इस के बा'द किसी बनी आदम को कोई गुनाह नुक़्सान नहीं देगा।" इस के लश्करियों ने कहा : "वोह कौन सी आयत है ?" इब्लीस ने उन्हें (मज़्कूरा आयत की) ख़बर दी। तो इस के चेलों ने कहा : "हम उन पर ख़्वाहिशात के दरवाज़े खोल देंगे कि वोह तौबा व इस्तिग़्फ़ार न कर पाएंगे और वोह इसी ख़याल में होंगे कि हम ह़क़ पर हैं येह सुन कर शैत़ान ख़ुश हो गया।"(1)

तौबा की राह में रुकावट

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान कर्दा ह़िकायत में शैत़ान के चेलों का येह कहना इन्तिहाई क़ाबिले तश्वीश है कि हम उन पर ख़्वाहिशात के दरवाज़े खोल देंगे कि वोह तौबा व इस्तिग़्फ़ार न कर पाएंगे और वोह इसी ख़याल में होंगे कि वोह ह़क़ पर हैं। गोया कि शयात़ीन की येह बात हमारे लिये एक चेलेन्ज कि हैसिय्यत रखती है लिहाज़ा हमें इस चेलेन्ज को क़बूल करते हुए मैदाने अ़मल में उतर जाना चाहिये और ख़ुद से येह अ़ह्द करना चाहिये कि हम हर बुरे काम से न सिर्फ़ ख़ुद बचते रहेंगे बल्कि दूसरों को भी नेकी

1 ... درمنثور، پ۴، آل عمران، تحت الآیۃ: ۱۳۵، ۲/۳۲۶

www.dawateislami.net

का हुक्म देते और बुराई से मन्अ़ करते रहेंगे नीज़ अगर ब तक़ाज़ाए ब-शरिय्यत हम से कोई गुनाह सरज़द हो जाए तो इज़्ज़ो नदामत (आ़जिज़ी व शर्मिन्दगी) के साथ फ़ौरन अपने रब عَزَّوَجَلَّ से मुआ़फ़ी मांगेंगे।

मगर अफ़्सोस ! फ़ी ज़माना मुसल्मानों के किरदार की बदहा़ली और इन की दिन ब दिन बढ़ती हुई बद आ'माली से ऐसा महसूस होता है कि हम शैत़ान को इस के चेलेन्ज में नाकाम बनाने की कोशिश नहीं कर रहे। ख़ुद ही ग़ौर कीजिये कि शैत़ान के चेलों ने इसे परेशान देख कर येही दो बातें कहीं थीं, (1) हम इन पर ख़्वाहिशात के दरवाज़े खोल देंगे कि वोह तौबा व इस्तिग़फ़ार न कर पाएंगे (2) वोह लोग (गुनाह करने के बा वुजूद) इसी ख़याल में होंगे कि वोह ह़क़ पर हैं। वाक़ेई आज कल गुनाहों के ज़राएअ़ इस क़दर आ़म हैं कि हर उठने वाला क़दम इन्सान को दानिस्ता व ना दानिस्ता किसी न किसी गुनाह की त़रफ़ ले जाता है अभी कुछ ही अ़र्सा पहले की बात है कि लोग रेडियो पर गाने और डिरामे सुन लिया करते थे, फिर टीवी ईजाद हुवा तो आवाज़ के साथ साथ तस्वीर भी दिखाई देने लगी मगर इस में कमी येह थी कि जो दिखाया जा रहा है सिर्फ़ वोही देख सकते हैं अपनी मरज़ी का कोई अ़मल दख़्ल न था, लेकिन वीसीआर की ईजाद के बा'द येह कमी भी पूरी हो गई फिर यके बा'द दीगरे एन्टीना और केबल ने ह़यासोज़ मनाज़िर दिखाने के सेंकड़ों मवाक़ेअ़ फ़राहम कर के गुनाहों की यलग़ार में मज़ीद तेज़ी पैदा कर दी मगर हर वक़्त फ़िल्में डिरामे और गाने बाजे देखने सुनने वालों को एक ही जगह टिक कर बैठना पड़ता था क्यूं कि टीवी बड़ा होता है हर वक़्त साथ रखना मुम्किन नहीं था लिहाज़ा MP3, MP4 और टीवी वाले मोबाइल फ़ोन जैसे छोटे छोटे

www.dawateislami.net

इलेक्ट्रोनिक आलात और इन्टरनेट ने गुनाह करने की राह में दरपेश तमाम रुकावटें दूर कर दीं और यूं मुआ़-शरे के करोड़ों अफ़राद इन चीज़ों के बे जा इस्ति'माल के ज़रीए गुनाहों के भंवर में फंसते चले जा रहे हैं और मज़ीद अफ़्सोस तो येह है कि गुनाहों में मगन होने के बा वुजूद अपने सियाह करतूतों को सहीह़ समझते हैं और सिर्फ़ येही नहीं बल्कि दूसरों के सामने अपने इस गुमाने फ़ासिद का इज़्हार करते और इस क़िस्म के जुर्अत मन्दाना जुम्ले कहते हुए भी नज़र आते हैं कि "सब चलता है, सब ठीक है वग़ैरा वग़ैरा" यक़ीनन इसी सोच ने मुआ़-शरे को तबाही के दहाने पर ला खड़ा किया है। مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ दिन भर जाने अन्जाने में कितने गुनाह करते हैं मगर तौबा व नदामत तो कुजा इस का एह़सास तक नहीं होता और जिसे येह एह़सास ही नहीं कि उस ने गुनाह किया है वोह तौबा की त़रफ़ कैसे आएगा ?

आज फ़िल्में डिरामे देखने, गाने बाजे सुनने पर कौन शर्मिन्दा होता है ? झूट, ग़ीबत, तोहमत, चुग़ली, वा'दा ख़िलाफ़ी, बद गुमानी और गाली गलोच जैसे गुनाहों पर कौन रन्जीदा होता है ? वालिदैन की ना फ़रमानी, मुसल्मानों की ह़क़ त-लफ़ी व दिल आज़ारी, चोरी, डाका ज़नी, क़त्लो ग़ारत गरी और शराब नोशी करने पर किस का सर शर्म से झुकता है ? नमाज़ें क़ज़ा होने पर किस को अफ़्सोस होता है ? उ़मूमन नमाज़ी नज़र आने वाले भी फ़ज्र की नमाज़ में सुस्ती कर जाते और इस पर किसी त़रह़ का अफ़्सोस भी नहीं करते इस के बर अ़क्स अगर नव बजे ऑफ़िस पहुंचना है और साढ़े आठ बजे आंख खुली तो फ़िक्र से बेह़ाल होने लगते हैं कि कब नाश्ता करूंगा, कब तय्यार होउंगा और कब दफ़्तर पहुंचूंगा इसी पर बस नहीं बल्कि घर वालों को डांटते भी होंगे कि जल्दी क्यूं नहीं उठाया ? ऑफ़िस के

www.dawateislami.net

लिये लेट उठने पर तो बड़ा अफ़्सोस होता है ! मगर फ़ज्र में आंख न खुलने पर कोई अफ़्सोस नहीं होता क्यूं कि लेट होने की सूरत में तन-ख़्वाह कट जाने का डर है लेकिन फ़ज्र की नमाज़ न पढ़ने के सबब जो दर्दनाक अ़ज़ाब मिलेगा उस का कोई ख़ौफ़ नहीं । मां भी अपने बच्चों को स्कूल भेजने की ख़ातिर सुब्ह सवेरे उठती है फ़ज्र का वक़्त भी होता है लेकिन नमाज़ नहीं पढ़ती, बल्कि मुसल्मानों की अच्छी ख़ासी ता'दाद तो مَعَاذَاللہ عَزَّوَجَلَّ पांचों नमाज़ें निहायत ही बेबाकी और ला परवाही के साथ तर्क कर देती है । मगर किसी को इस का अफ़्सोस नहीं होता ह़ालां कि नमाज़ पढ़ना मुसल्मान पर फ़र्ज़ और क़ज़ा करना या सिरे से तर्क कर देना गुनाहे कबीरा ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है ।

नमाज़ छोड़ने का अन्जाम

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से मरवी है, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इर्शाद फ़रमाते हैं : ''مَنْ تَرَكَ صَلَاةً مُتَعَمِّدًا كُتِبَ اِسْمُهٗ عَلٰى بَابِ النَّارِ فِيْمَنْ يَّدْخُلُهَا या'नी जो कोई जानबूझ कर एक नमाज़ भी क़ज़ा कर देता है, उस का नाम जहन्नम के उस दरवाज़े पर लिख दिया जाएगा जिस से वोह जहन्नम में दाख़िल होगा ।''[1] नमाज़ में सुस्ती करने वाले को क़ब्र इस त़रह़ दबाएगी कि उस की पस्लियां टूट फूट कर एक दूसरे में पैवस्त हो जाएंगी, उस की क़ब्र में आग भड़का दी जाएगी और उस पर एक गन्जा सांप मुसल्लत़ कर दिया जाएगा नीज़ क़ियामत के रोज़ उस का ह़िसाब सख़्ती से लिया जाएगा ।[2]

---

1 ... حلیۃ الاولیاء، ۷/۲۹۹، حدیث: ۱۰۵۹۰

2 ... الزواجر، الکبیرۃ السابعۃ والسبعون، تعمد تاخیر الصلاۃ الخ... ۱/۲۵۵، ملتقطا

www.dawateislami.net

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! तर्के नमाज़ की इन वईदों को सुन कर तो हमारे जिस्म का रुवां रुवां कांप जाना चाहिये और हमें अपने गुनाहों पर आंसू बहाना चाहिये मगर अफ़्सोस ! हमें अपने बुरे अफ़्आ़ल पर फ़ख़्र करने से फ़ुरसत ही कहां जो आंसू बहाएं । ज़रा मुआ़-शरे पर नज़र दौड़ाएं और देखें कि लोग किस त़रह़ गुनाहों पर फ़ख़्र करते इतराते नज़र आते हैं गोया अपने इन अफ़्आ़ल पर ख़ुद को ह़क़ ब जानिब समझते हैं । आज का नौ जवान सोने की चेन और मुख़्तलिफ़ धातों की अंगूठियां और कड़े पहनने नीज़ औ़रतों की त़रह़ लम्बे लम्बे बाल रख कर घूमने में फ़ख़्र महसूस करता है अगर इन बुराइयों को बाइ़से शर्म जानता तो ऐसे अफ़्आ़ल से दूर रहता या कम अज़ कम बे-बाकाना यूं सरे आ़म न फिर रहा होता । बाप अपनी बे पर्दा फ़ेशन ज़दा लड़की को देख कर फ़ख़्र ही तो करता है वरना शर्म व ग़ुस्से से उस के चेहरे का रंग उड़ जाता, इसी त़रह़ अपने सर से ह़या की चादर उतारने वाली ख़ुद वोह फ़ेशन परस्त लड़की और इसे दादे तह़्सीन देने वाले अफ़राद भी तो गोया इस बे पर्दगी पर फ़ख़्र करते मा'लूम होते हैं । अब तो नौबत यहां तक जा पहुंची है कि अगर कोई म-दनी माह़ोल की बदौलत पर्दा करना चाहे तो उस की राह में रोड़े अटकाए जाते और त़ा'नो तश्नीअ़ के तीर बरसाए जाते हैं । शादी बियाह की तक़रीबात में मां बाप के सामने जवान बेटी नाच रही होती है और उन के कान पर जूं तक नहीं रेंगती, मंगेतर लड़की का हाथ पकड़ कर मंगनी की अंगूठी पहनाता है तो लोग ख़ुशी से फूले नहीं समाते, इसी त़रह़ **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मुबारक सुन्नत दाढ़ी शरीफ़ मुंडवाने और मग़रिबी फ़ेशन के मुत़ाबिक़ लिबास अपनाने पर भी फ़ख़्र किया जाता है और फिर सूद व रिश्वत

www.dawateislami.net

भी तो हमारे मुआ़-शरे में आ़म होता जा रहा है सूद का लैन दैन करने पर तो कोई शर्मो नदामत ही नहीं होती बल्कि इसी माले ह़राम से अपना कारोबार मज़ीद फैला कर गाड़ी, बंगला और फ़ेक्टरी बना कर फ़ख़्र किया जाता है ह़ालां कि एक मुसल्मान के लिये शर्म से डूब मरने का मक़ाम है कि सूद का लेना गोया अपनी मां के साथ ज़िना करने की त़रह़ है। इस ज़िम्न में 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुनिये और दीगर गुनाहों के इ़लावा सूद जैसे बद तरीन गुनाह से भी तौबा कीजिये ।

सूद की नुहूसत

1. सूद के सत्तर दरवाज़े हैं, इन में से कमतर ऐसा है जैसे कोई मर्द अपनी मां से ज़िना करे ।[1]
2. सूद का एक दिरहम जिसे आदमी जानते हुए खाता है 36 बार ज़िना करने से ज़ियादा बुरा है ।[2]
3. सूदख़ोर को क़ियामत के दिन जुनून की ह़ालत में उठाया जाएगा कि उस के सूद खाने के बारे में सब अहले महशर जान लेंगे ।[3]

تُوْبُوْا اِلَى اللهِ! اَسْتَغْفِرُ اللهَ

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस त़रह़ के कितने ही काम हैं जो शरअ़न ना जाइज़ व ह़राम हैं लेकिन बद क़िस्मती से आज का मुसल्मान **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

1 ... شعب الایمان، باب فی قبض الید عن الاموال المحرمۃ، ۴/۳۹۴، حدیث: ۵۵۲۰

2 ... مسند امام احمد عبد اللہ بن حنظلۃ، ۸/۲۲۳، حدیث: ۲۲۰۱۶

3 ... کتاب الکبائر، الکبیرۃ الثانیۃ عشرۃ، باب الریاء، ص۶۸

www.dawateislami.net

के मन्अ़ करने के बा वुजूद इन कामों को फ़ख़्रिय्या अन्दाज़ में न सिर्फ़ ख़ुद करता बल्कि इस की तश्हीर कर के दूसरे मुसल्मानों को भी अपनी मज़्मूम ह़-र-कतों की त़रफ़ राग़िब कर रहा है। जी हां ! अपने दोस्त अह़बाब की मह़ाफ़िल में बैठ कर अपनी रिश्वत सितानी, फ़्रॉड, सूदी कारोबार और दीगर ग़ैर शर-ई अफ़्आ़ल के ज़रीए़ कसीर आमदनी ह़ासिल होने के क़िस्से और फ़िल्मों डिरामों, गाने बाजों की बातें किस त़रह़ मज़े ले ले कर बयान की जाती हैं। दूसरों को अपने गुनाहों भरे करतूत सुनाने वाला अगर्चे येह नहीं कहता कि मैं ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी की है लेकिन जो क़िस्से वोह सुना रहा है दर ह़क़ीक़त ना फ़रमानी ही पर मब्नी होते हैं इस त़रह़ गोया वोह ज़बाने क़ाल से न सही मगर ज़बाने ह़ाल से येही कह रहा होता है कि मैं ने फ़ुलां फ़ुलां कामों में **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ना फ़रमानी की है आओ ! तुम भी करो बहुत मज़ा आता है म-सलन एक दोस्त दूसरे से कहता है "फ़ुलां फ़िल्म नई आई है मैं ने देखी है बड़ा मज़ा आया तुम भी ज़रूर देखना।" हमें चाहिये कि दिलचस्पी के साथ गुनाहों भरे क़िस्से सुनने और ऐसे लोगों का ह़ौसला बढ़ाने के बजाए ख़ुद भी गुनाहों से बचें और उन्हें भी अह़्सन अन्दाज़ में नेकी की दा'वत देते हुए तौबा व इस्तिग़्फ़ार करने और आयिन्दा गुनाहों से बाज़ रहने का ज़ेह्न दें।

दिल की सियाही की वज्ह

याद रखिये ! गुनाहों की वज्ह से जहां इन्सान का ज़ाहिरी किरदार दाग़दार होता है वहीं इस के बात़िन में भी ख़राबी पैदा हो

www.dawateislami.net

जाती है जिस के सबब गुनाहों की त़रफ़ इस का रुज्ह़ान बढ़ जाता है और नेकियों में दिल नहीं लगता।

रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "जब कोई बन्दा गुनाह कर लेता है, तो उस के क़ल्ब पर एक सियाह नुक़्ता लग जाता है, लेकिन जब वोह **अल्लाह** तआ़ला से त़-लबे मग़्फ़िरत करता है और तौबा कर लेता है तो उस का क़ल्ब साफ़ कर दिया जाता है और अगर वोह (तौबा के बजाए दोबारा) गुनाह कर ले तो येह सियाही मज़ीद बढ़ जाती है, यहां तक कि उस का सारा दिल सियाह हो जाता है।"(1)

यक़ीनन जिस त़रह़ "हर मरज़ की दवा होती है" और हर परेशानी का कोई न कोई ह़ल होता है इसी त़रह़ गुनाहों के सबब दिल के सियाह और ज़ंग आलूद होने वाली परेशानी का यक़ीनी ह़ल भी मौजूद है और वोह येह कि इन्सान गुनाहों से बाज़ आ जाए और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से तौबा व इस्तिग़्फ़ार (त़-लबे मग़्फ़िरत) करे इस की ब-र-कत से न सिर्फ़ उस का दिल का ज़ंग जाता रहेगा बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस के गुनाह का नामो निशान तक मिटा देगा और उस की मुश्किलें भी आसान फ़रमाएगा। आइये इस ज़िम्न में 3 फ़रामीने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मुला-ह़ज़ा कीजिये।

1. बेशक लोहे की त़रह़ दिलों को भी ज़ंग लग जाता है और उस की सफ़ाई त़-लबे मग़्फ़िरत है।(2)
2. जब बन्दा अपने गुनाहों से तौबा करता है तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ लिखने वाले फ़िरिश्तों को उस के गुनाह भुला देता है, इसी त़रह़ इस

1 ... ترمذی، کتاب التفسیر، باب ومن سورۃ ویل للمطففین، ۵/۲۲۰، حدیث: ۳۳۴۵

2 ... معجم صغیر، الجزء الاول باب الطاء، من اسمہ طاھر، ص ۱۸۴

www.dawateislami.net

के आ'ज़ा (हाथ पाउं वग़ैरा) को भी भुला देता है और उस के ज़मीन पर निशानात भी मिटा डालता है। यहां तक कि क़ियामत के दिन जब वोह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से मिलेगा तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से उस के गुनाह पर कोई गवाह न होगा।[1]

3. जिस ने इस्तिग़फ़ार को लाज़िम पकड़ लिया, तो **अल्लाह** तआ़ला उस की तमाम मुश्किलों में आसानी, हर ग़म से आज़ादी और बे हिसाब रिज़्क़ अ़त़ा फ़रमाता है।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! अगर हम इस्तिग़फ़ार की कसरत करें तो उम्मीद है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम गुनहगारों पर अपनी अ़त़ाओं की ऐसी बारिश फ़रमाए जिस की ब-र-कत से न सिर्फ़ हमारी आख़िरत बेहतर हो जाए बल्कि तंगिये रिज़्क़ और बे औलादी जैसी बड़ी बड़ी दुन्यवी परेशानियां भी दूर हो जाएं। जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना हूद عَلَيْهِ السَّلَام का क़ौल नक़्ल करते हुए इर्शाद फ़रमाता है :

وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا مُجْرِمِيْنَ ﴿۵۲﴾

(پ۱۲، ھود: ۵۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और ऐ मेरी क़ौम ! अपने रब से मुआ़फ़ी चाहो फिर उस की त़रफ़ रुजूअ़ लाओ तुम पर ज़ोर का पानी भेजेगा और तुम में जितनी क़ुव्वत है इस से और ज़ियादा देगा और जुर्म करते हुए रू गर्दानी न करो।

---

1 ... الترغیب والترھیب، کتاب التوبۃ والزھد، باب الترغیب فی التوبۃ، ۴/ ۹، حدیث: ۴۸۱۵

2 ... ابو داود، کتاب الوتر، باب فی الاستغفار، ۲/ ۱۲۲ حدیث: ۱۵۱۸

www.dawateislami.net

तौबा बाइसे वुस्अ़ते रिज़्क़ है

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی इस आयते करीमा के तह़्त बयान फ़रमाते हैं : "जब क़ौमे आ़द ने ह़ज़रते हूद عَلَیْہِ السَّلَام की दा'वत क़बूल न की तो **अल्लाह** तआ़ला ने इन के कुफ़्र के सबब तीन साल तक बारिश मौक़ूफ़ कर दी और निहायत शदीद क़ह़्त नुमूदार हुवा और उन की औ़रतों को बांझ (वोह औ़रत जिस के बच्चा पैदा न हो) कर दिया जब येह लोग बहुत परेशान हुए तो ह़ज़रते हूद عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने वा'दा फ़रमाया कि अगर वोह **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) पर ईमान लाएं और उस के रसूल (عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) की तस्दीक़ करें और उस के हुज़ूर तौबा व इस्तिग़्फ़ार करें तो **अल्लाह** तआ़ला बारिश भेजेगा और उन की ज़मीनों को सर सब्ज़ो शादाब कर के ताज़ा ज़िन्दगी अ़त़ा फ़रमाएगा और क़ुव्वत व औलाद देगा। ह़ज़रते इमामे ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ एक मर्तबा अमीरे मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के पास तशरीफ़ ले गए तो आप से अमीरे मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) के एक मुलाज़िम ने कहा कि मैं मालदार आदमी हूं मगर मेरे कोई औलाद नहीं मुझे कोई ऐसी चीज़ बताइये जिस से **अल्लाह** (عَزَّوَجَلَّ) मुझे औलाद दे। आप ने फ़रमाया : "इस्तिग़्फ़ार पढ़ा करो।" उस ने इस्तिग़्फ़ार की यहां तक कसरत की कि रोज़ाना सात सो मर्तबा इस्तिग़्फ़ार पढ़ने लगा इस की ब-र-कत से उस शख़्स के दस बेटे हुए। येह ख़बर ह़ज़रते (सय्यिदुना) मुआ़विया (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) को हुई तो उन्हों ने उस शख़्स से फ़रमाया कि तूने ह़ज़रते (सय्यिदुना) इमामे (ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से यूं क्यूं न दरयाफ़्त किया कि येह अ़मल

www.dawateislami.net

हुज़ूर ने कहां से फ़रमाया। दूसरी मर्तबा जब उस शख़्स को इमामे (ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) से नियाज़ (श-रफ़े मुलाक़ात) ह़ासिल हुवा तो उस ने येह दरयाफ़्त किया, इमामे (ह़सन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ) ने फ़रमाया कि तूने ह़ज़रते हूद (عَلَیْہِ السَّلَام) का क़ौल नहीं सुना जो उन्हों ने फ़रमाया : ''یَزِدْکُمْ قُوَّۃً اِلٰی قُوَّتِکُمْ (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** तुम में जितनी क़ुव्वत है (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) उस से और ज़ियादा देगा) और ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام का येह इर्शाद ''یُمْدِدْکُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِیْنَ'' (**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** (**अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ) माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा) फ़ाएदा : कस्रते रिज़्क़ और ह़ुसूले औलाद के लिये इस्तिग़फ़ार का ब कसरत पढ़ना क़ुरआनी अ़मल है।

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

तौबा का अ़जब अन्दाज़ !

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह बात ज़ेह्न नशीन रखनी चाहिये कि हमारा अ-ज़ली दुश्मन शैत़ान इतनी आसानी से हमें तौबा पर आमादा नहीं होने देगा बल्कि तौबा की राह में त़रह़ त़रह़ की रख़्ना अन्दाज़ियां पैदा कर के हमें इस के दुन्यवी व उख़्रवी फ़वाइद से मह़रूम करने की कोशिश करेगा। हो सकता है वोह इस क़िस्म के वस्वसों में भी मुब्तला करे कि ''अभी मेरी उ़म्र ही क्या है, अभी तो जवानी की बहारें भी नहीं देखीं, अभी तो बाल भी सफ़ेद नहीं हुए वग़ैरा वग़ैरा'' और अगर बिलफ़र्ज़ हम इन वस्वसों से बच भी जाएं तो ऐन मुम्किन है कि वोह हमें दुरुस्त अन्दाज़ से तौबा न करने दे जैसा कि आज कल तौबा का भी अ़जीब अन्दाज़ देखा जाता है कि

www.dawateislami.net

लबों पर मुस्कुराहट बल्कि बा'ज़ अवक़ात हंसी के फ़व्वारे उबल रहे होते हैं और गालों पर आहिस्ता आहिस्ता चपत मारते हुए "तौबा तौबा" बोल कर दिल को मना लिया जाता है कि तौबा हो गई। याद रखिये ! येह ह़क़ीक़ी नहीं महज़ रस्मी तौबा है।

ह़ज़रते सय्यिदुना इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है कि बहुत से तौबा करने वाले क़ियामत के दिन रद कर दिये जाएंगे। उन का गुमान होगा कि वोह तौबा करने वाले हैं ह़ालां कि वोह तौबा करने वाले नहीं हैं। क्यूं कि उन्हों ने तौबा के तक़ाज़े पूरे नहीं किये।[1]

सच्ची तौबा की अ़लामात

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मुबारक رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ ने फ़रमाया : "सच्ची तौबा की छ[6] अ़लामात हैं : (1) गुज़श्ता गुनाहों पर नादिम होना (2) गुनाहों की त़रफ़ न लौटने का अ़ज़्मे मुसम्मम (पुख़्ता इरादा) (3) जिन फ़राइज़ में कोताही की है उन की अदाएगी (4) जिन का ह़क़ तलफ़ किया है उन्हें उन का ह़क़ देना (5) ना जाइज़ व ह़राम माल से बदन पर जो चरबी चढ़ गई हो उसे ग़म व ह़ुज़्न के ज़रीए पिघलाना यहां तक कि खाल हड्डी से चिमट जाए और फिर अगर उस पे गोश्त आए तो ऐसा गोश्त आए जो ह़लाल व त़य्यिब से परवान चढ़ा हो (6) जिस त़रह़ बदन को नफ़्सानी ख़्वाहिशात की लज़्ज़त पहुंचाई है इसी त़रह़ इसे इत़ाअ़त का मज़ा चखाना।"[2]

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

1 ... شعب الایمان، باب فی معالجۃ کل ذنب بالتوبۃ، ۵/۴۳۶، حدیث: ۷۱۷۹

2 ... شرح بخاری لابن بطّال، کتاب الدعاء، باب توبوا الی اللّٰہ توبۃ نصوحا، ۱۰/۸۰

www.dawateislami.net

तौबा का दुरुस्त त़रीक़ा

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस से क़ब्ल कि मौत का फ़िरिश्ता पैग़ामे अजल ले कर आ जाए और देखते ही देखते हमें अंधेरी क़ब्र में उतर कर अपने गुनाहों का अन्जाम भुगतना पड़े आइये ! अपने नफ़्स का मुह़ासबा कीजिये और इसे गुनाहों पर सर-ज़निश कीजिये, मसलन ज़बान से सरज़द होने वाले गुनाहों पर अपने नफ़्स को इस त़रह़ डांटिये कि ऐ नफ़्स ! तेरे रब عَزَّوَجَلَّ ने तुझे ज़बान जैसी अ़ज़ीमुश्शान ने'मत अ़त़ा की, चाहिये तो येह था कि तू इस से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का शुक्र और उस की ह़म्द बजा लाता, क़ुरआने पाक की तिलावत करता और ज़िक्रो दुरूद से इस को तर रखता, मगर अफ़्सोस ! तूने इस अ़ज़ीम ने'मत की बे क़द्री करते हुए इस का ग़लत़ इस्ति'माल किया और इस के ज़रीए झूट, ग़ीबत, चुग़ली, बिला इजाज़ते शर-ई मुसल्मानों की दिल आज़ारी जैसे गुनाहों का मुर-तकिब ठहरा। ज़रा सोच तो सही ! अगर वोह तुझे क़ुव्वते गोयाई से महरूम कर देता तो तेरा क्या बनता ? इसी त़रह़ दीगर आ'ज़ा से गुनाह होने पर भी नफ़्स को तम्बीह करते रहना चाहिये और येह भी ग़ौर करना चाहिये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ हम पर किस क़दर मेहरबान है कि जब हम गुनाह करते हैं तो वोह उस गुनाह पर हमारी बर वक़्त गिरिफ़्त नहीं फ़रमाता बल्कि हमें मोहलत देता है कि हम तौबा कर के अपने गुनाहों की मुआ़फ़ी मांग लें। आइये तरग़ीब के लिये दो वाक़िआ़त मुला-ह़ज़ा कीजिये।

नदामत का सिला

बनी इसराईल के एक नौ जवान ने बीस साल तक **अल्लाह**

www.dawateislami.net

عَزَّوَجَلَّ की इबादत की फिर बीस साल तक उस की ना फ़रमानी की, फिर एक दिन आईना देखा तो अपनी दाढ़ी में सफ़ेद बाल देख कर ग़मज़दा हो गया और बारगाहे ख़ुदावन्दी में अ़र्ज़ गुज़ार हुवा : "ऐ मेरे **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! मैं ने बीस साल तक तेरी इत़ाअ़त की फिर बीस साल तक तेरी ना फ़रमानी की, अब अगर मैं तेरी बारगाह में रुजूअ़ करूं तो क्या तू मुझे क़बूल फ़रमाएगा ?" उस ने किसी कहने वाले को येह कहते सुना : "तूने हम से महब्बत की तो हम ने भी तुझ से महब्बत की फिर तूने हमें छोड़ दिया तो हम ने भी तुझे छोड़ दिया, तूने हमारी ना फ़रमानी की हम ने तुझे मोहलत दी और अगर तू हमारी त़रफ़ आएगा तो हम तुझे क़बूल कर लेंगे।"(1)

अनोखी नदामत

ह़ज़रते सय्यिदुना मूसा **कलीमुल्लाह** عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के ज़माने में एक आदमी तौबा पर क़ाइम नहीं रहता था, जब भी तौबा करता तोड़ डालता था, बीस साल तक वोह इसी ह़ाल पर रहा, फिर **अल्लाह** तआ़ला ने ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام की त़रफ़ वह्य फ़रमाई कि मेरे बन्दे से कहो मैं इस पर ग़ज़ब नाक हूं। ह़ज़रते मूसा عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ने उस तक येह पैग़ाम पहुंचा दिया। वोह बड़ा ग़मगीन हुवा और येह कहता हुवा सह़रा की त़रफ़ चल पड़ा, ऐ मेरे रब ! क्या तेरी रह़मत ख़त्म हो गई है या मेरी ना फ़रमानी ने तुझे नुक़्सान पहुंचाया है या तेरी मुआ़फ़ी के ख़ज़ाने ख़त्म हो गए हैं, कौन सा गुनाह तेरे अ़फ़्वो करम से बड़ा है, करम तेरी क़दीम सिफ़त है

1 ... مکاشفۃ القلوب، الباب السابع عشر فی بیان الامانۃ والتوبۃ، ص ۶۲

www.dawateislami.net

और कमीनगी मेरी ख़स्लत है तो क्या मेरी सिफ़त तेरी सिफ़त पर ग़ालिब आ सकती है, अगर तू अपने बन्दों से अपनी रह़मत रोक लेगा तो वोह किस के पास जाएंगे ? अगर तूने इन्हें रद कर दिया तो येह किस के पास जाएंगे ? ऐ मौला ! अगर तेरी रह़मत ख़त्म हो गई है और मुझे अ़ज़ाब देना लाज़िम हो गया तो अपने तमाम बन्दों का अ़ज़ाब मुझ पर रख दे, मैं अपनी जान इन के बदले बत़ौरे फ़िदया पेश करता हूं। **अल्लाह** तबा-र-क व तआ़ला ने इर्शाद फ़रमाया : "ऐ मूसा ! उस की त़रफ़ जाओ और उस से कहो कि अगर तेरे गुनाह ज़मीन भर हों तब भी मैं तुझे बख़्श दूंगा कि तूने मुझे कमाले क़ुदरत व अ़फ़्वो रह़मत के साथ जान लिया है।"(1)

कर के तौबा मैं फिर गुनाहों में हो ही जाता हूं मुब्तला या रब
किस के दर पर मैं जाऊंगा मौला गर तू नाराज़ हो गया या रब

(वसाइले बख़्शिश, 87, 88)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! येह रिक़्क़त अंगेज़ रह़मत भरे वाक़िआ़त सुन कर यक़ीनन हमारे दिलों को ढारस मिली होगी बल्कि ऐन मुम्किन है कि हम तौबा भी कर लें मगर याद रखिये कि तौबा पर इस्तिक़ामत ह़ासिल करन के लिये लाज़िमी त़ौर पर अच्छा माह़ोल और नेकों की सोह़बत निहायत ज़रूरी है वरना तौबा के बा'द दोबारा गुनाहों की त़रफ़ जाने का अन्देशा है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी का म-दनी माह़ोल हमारे लिये बहुत बड़ी ने'मत है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस माह़ोल में रचे बसे रहेंगे तो नेकियों का जज़्बा मिलेगा, गुनाहों से नफ़रत होगी और साबिक़ा गुनाहों पर नदामत के साथ ख़ालिस तौबा

1 ... مکاشفۃ القلوب، الباب السابع عشر فی بیان الامانۃ والتوبۃ، ص ۶۳

www.dawateislami.net

भी नसीब हो जाएगी। आइये इस ज़िम्न में एक म-दनी बहार मुला-हज़ा कीजिये :

एक ताइब का वाक़िआ

बाबुल मदीना (कराची) के मुक़ीम एक इस्लामी भाई के बयान का लुब्बे लुबाब है कि दा'वते इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता होने से क़ब्ल मेरी ज़िन्दगी के क़ीमती अय्याम गुनाहों की पुरख़ार वादियों में भटक्ते बसर हो रहे थे, नमाज़ें क़ज़ा करना, नफ़्सानी ख़्वाहिशात की तस्कीन की ख़ातिर फ़िल्में डिरामे देखना, गाने बाजे सुन कर मस्त हो जाना, झूट बोल कर लोगों को धोका देना, इन की दिल आज़ारी करना और मज़ाक़ मस्ख़री के ज़रीए इन को परेशान करना वग़ैरा गुनाहों से मेरा नामए आ'माल भरा हुवा था। मैं दुन्या की रंगीनियों में इस क़दर खोया हुवा था कि मुझे अन्जामे आख़िरत की बिल्कुल फ़िक्र न थी कि अगर गुनाहों की पादाश में अ़ज़ाबे जहन्नम में गिरिफ़्तार हो गया तो मेरा कमज़ोर व ना-तुवां जिस्म किस त़रह़ इसे बरदाश्त कर पाएगा। मेरी इस्लाह़ का सबब कुछ इस त़रह़ बना कि ग़ालिबन 2001 सि.ई. की बात है एक दिन नमाज़ की अदाएगी के लिये मस्जिद जाना हुवा, वहां एक आ़शिक़े रसूल सुन्नतों के आईनादार इस्लामी भाई दर्से फ़ैजाने सुन्नत दे रहे थे, मैं भी नमाज़ अदा करने के बा'द दर्से फ़ैज़ाने सुन्नत की ब-र-कतें पाने के लिये क़रीब जा कर बैठ गया और बग़ौर सुनने लगा, न जाने लफ़्ज़ों में ऐसी क्या तासीर थी कि जूं जूं सुनता गया मेरे दिल का मैल धुलता गया और मैं ने हाथों हाथ गुनाहों से दामन छुड़ाने और नमाज़ों पर इस्तिक़ामत पाने की निय्यत कर ली और अपनी निय्यत को पाए

www.dawateislami.net

तक्मील तक पहुंचाने के लिये दा'वते इस्लामी का म-दनी माहोल इख़्तियार कर लिया। नीज़ दीनी मा'लूमात में इज़ाफ़ा करने, नेक आ'माल का जज़्बा हासिल करने और गुनाहों से ख़ुद को बचाने के लिये वक़्तन फ़ वक़्तन शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के सुन्नतों भरे बयानात सुनने की सआ़दत ह़ासिल करने लगा। रफ़्ता रफ़्ता मुझे अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयानात से इस क़दर लगाव हो गया कि जब भी कोई नया बयान आता मैं उसे ज़रूर सुनता ह़त्ता कि वसाइल न होने की सूरत में अपने अ़लाक़े में क़ाइम एक लाएब्रेरी से अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के बयानात और मल्फ़ूज़ात के केसिट ह़ासिल कर के अपना शौक़ पूरा करता। बयान के आख़िर में जब अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه गुनाहों से बचने और नमाज़ें पढ़ने की निय्यत करवाते तो मैं भी बे साख़्ता हाथ उठा कर गुनाहों भरी ज़िन्दगी छोड़ने और सुन्नतों को इख़्तियार करने का अ़ज़्मे मुसम्मम करता। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मुझे म-दनी माहोल अपनाने की ब-र-कत से न सिर्फ़ गुनाहों के अमराज़ से शिफ़ा मिली बल्कि जिस्मानी बीमारियां भी दूर हो गईं। काफ़ी अ़र्से से मेरे जिस्म पर दाने थे नीज़ सीने और पस्लियों में शदीद दर्द रहता था काफ़ी इलाज करवाया मगर फ़ाएदा न हुवा ख़ुदा की क़ुदरत देखिये कि म-दनी माहोल अपनाने के बा'द दाने और दर्द ख़ुद बख़ुद ख़त्म हो गए। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ ता दमे तह़रीर तक़रीबन आठ साल हो गए मैं बिल्कुल ठीक हूं ह़ल्क़ा मुशा-वरत के ख़ादिम (निगरान) की हैसिय्यत से अ़लाक़े में म-दनी कामों की तरक़्क़ी के लिये कोशां हूं।

www.dawateislami.net

ماخذ و مراجع

شمار	کتاب	مصنف/مؤلف	مطبوعہ
1	قرآن پاک	کلام باری تعالیٰ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
2	کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
3	خزائن العرفان	صدرالافاضل مفتی نعیم الدین مرادآبادی متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ
4	درمنثور	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی متوفی ۹۱۱ھ	دارالفکر بیروت
5	روح البیان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفی ۱۱۳۷ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت
6	صحیح البخاری	امام محمد بن اسماعیل بخاری متوفی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۱۹ھ
7	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری نیشاپوری متوفی ۲۶۱ھ	دارابن حزم ۱۴۱۹ھ
8	سنن الترمذی	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
9	سنن النسائی	امام احمد بن شعیب نسائی متوفی ۳۰۳ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۶ھ
10	المسند	امام ابوعبداللہ احمد بن محمد بن حنبل متوفی ۲۴۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
11	المعجم الصغیر	امام ابوالقاسم سلیمان بن احمد طبرانی متوفی ۳۶۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۰۴ھ
12	سنن ابن ماجہ	امام ابوعبداللہ محمد بن یزید ابن ماجہ متوفی ۲۷۳ھ	دارالمعرفہ بیروت ۱۴۲۰ھ
13	ابوداود	امام ابوداود سلیمان بن اشعث سجستانی متوفی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
14	شعب الایمان	امام ابوبکر احمد بن حسین بیہقی متوفی ۴۵۸ھ	دارالکتب العلمیہ ۱۴۲۱ھ
15	الترغیب والترھیب	امام زکی الدین عبدالعظیم بن عبدالقوی متوفی ۶۵۶	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۸ھ
16	فتح الباری	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی متوفی ۸۵۲ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۰ھ
17	شرح بخاری لابن بطال	ابوالحسین علی بن خلف بن عبداللہ	مکتبۃ الرشید الریاض ۱۴۲۰ھ
18	احیاء علوم الدین	ابوحامد امام محمد بن محمد غزالی متوفی ۵۰۵ھ	دارصادر بیروت ۲۰۰۰ھ
19	منہاج العابدین	ابوحامد امام محمد بن محمد غزالی متوفی ۵۰۵ھ	دارالکتب العلمیہ
20	مکاشفۃ القلوب	ابوحامد امام محمد بن محمد غزالی متوفی ۵۰۵ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
21	الزھد	شیخ الاسلام عبداللہ بن مبارک المزوری متوفی ۱۸۱ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت
22	حلیۃ الاولیا	حافظ ابونعیم احمد بن عبداللہ اصفہانی متوفی ۴۳۰ھ	دارالکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۹ھ
23	الزواجر عن اقتراف الکبائر	ابوالعباس احمد بن محمد بن علی بن حجر ہیتمی مکی متوفی ۹۷۴	دارالمعرفہ ۱۴۱۹ھ
24	کتاب الکبائر	الامام الحافظ الذہبی متوفی ۷۴۸ھ	اشاعت اسلام کتب خانہ
25	توبہ کی روایات وحکایات	المدینۃ العلمیہ	مکتبۃ المدینہ ۱۴۲۶ھ
26	مرآۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی متوفی ۱۳۹۱	ضیاء القرآن پبلی کیشنز

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
बेटे की वसिय्यत	1	नर्म दिल वाले	15
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	आओ गुनहगारो !	
नदामत के सबब मग़्फ़िरत	2	मग़्फ़िरत मांग लो.....	16
गुनाहों का एह़सास पैदा कीजिये !	4	शैत़ान का चेलेन्ज	16
तौबा की अहम्मिय्यत	5	तौबा की राह में रुकावट	17
बार बार तौबा कीजिये !	8	नमाज़ छोड़ने का अन्जाम	20
तौबा के बारे में 6 फ़ामीने ख़ुदावन्दी	8	सूद की नुहूसत	22
तौबा का इन्आ़म	10	दिल की सियाही की वज्ह	23
तौबा की ज़रूरत किस को है ?	11	तौबा बाइ़से वुस्अ़ते रिज़्क़ है	26
सुब्ह़ो शाम तौबा	13	तौबा का अ़जब अन्दाज़ !	27
तौबा करने वालों के लिये		सच्ची तौबा की अ़लामात	28
ख़ुश ख़बरी	14	तौबा का दुरुस्त त़रीक़ा	29
पलक झपकने से पहले तौबा क़बूल	14	नदामत का सिला	29
नामए आ'माल से		अनोखी नदामत	30
गुनाह मिट जाता है	14	एक ताइब का वाक़िआ़	32
शैत़ान की तमन्ना !	15	मआख़िज़ो मराजेअ़	34

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

सुन्नत की बहारें

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आलमगीर ग़ैर सियासी तहरीक **दा'वते इस्लामी** के महके महके म-दनी माहोल में ब कसरत सुन्नतें सीखी और सिखाई जाती हैं, हर जुम्आरात इशा की नमाज़ के बा'द आप के शहर में होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात गुज़ारने की म-दनी इल्तिजा है। आशिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में ब निय्यते सवाब सुन्नतों की तरबियत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आमात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये, اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ इस की ब-र-कत से पाबन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नफ़रत करने और **ईमान की हिफ़ाज़त** के लिये कुढ़ने का ज़ेहन बनेगा।

हर इस्लामी भाई अपना येह ज़ेहन बनाए कि "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ" अपनी इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी इन्आमात** पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये **म-दनी क़ाफ़िलों** में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ

ISBN 0133045
मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापुर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net